फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर **336** 1/– *जून* **2016**

तुरन्त और सक्रिय समय
लुप्त होता विभाजन सोचने और करने में

ताऊ, मजदूर समाचार के पिछले अंक में बेंगलुरू की लाखों महिला मजदूरों के बारे में जो बातें थी वहाँ आपने कहा " कोई नेगोशियेशन नहीं हुई "। यह नेगोशियेशन क्या चीज है ?

बन्धु, नेगोशियेशन तो नेगोशियेशन होती है। दो पक्षों के प्रतिनिधियों के बीच जो वार्ता होती है, वादविवाद होता है, लेन-देन होता है, सौदेबाजी होती है। यही सब को तो नेगोशियेशन कहते हैं।

यह हमारे कार्यस्थलों पर तो है ही नहीं। आप समझ लो कि हम तो प्रतिनिधि-मुक्त हैं। और यह कोई अजूबा नहीं है। मेरे जितने दोस्त हैं वे सब अपने कार्यस्थलों पर तो प्रतिनिधि-मुक्त हैं।

तो फिर, क्या आपने नेगोशियेशन शब्द सुना ही नहीं है ? बीस-पच्चीस साल पहले तो यह आम शब्द था। नेगोशियेशन चल रही है, नेगोशियेशन में मैनेजमेन्ट अड़ी है, यह सुनने-कहने में बहुत रहती थी।

ताऊ, इतना समय था लोगों के पास कि महीनों इन्तजार कर लेते थे ?

बन्धु, आपकी बात पूरी समझ में नहीं आ रही।

ताऊ, आपने तो लिखा है न कि नेगोशियेशन में नहीं गये और लाखों करोड़ की राहत तत्काल हासिल की। यह राहत करोड़ों मजदूरों के लिये हासिल की जिन्हें वो जानते नहीं हैं। मेरा यह कहना है कि यह तभी हुआ कि वो नेगोशियेशन शब्द से अपरिचित हैं।

तुम कह रहे हो कि नेगोशियेशन शब्द लुप्त हो चुका है ?

ताऊ, मैं यह कहने की कोशिश कर रहा हूँ कि जो आप मजदूर समाचार में झलक देते हो : अचानक काम बन्द कर फैक्ट्री के अन्दर बैठ जाना, कई दिन फैक्ट्री से नहीं निकलना, कैन्टीन में लन्च का बॉयकाट कर देना, ऐसी बातें निरन्तर चलती रहती हैं। और आप यह भी झलक देते रहते हो कि कोई मीटिंग, कोई प्रतिनिधि, कोई गुट यह तय नहीं करते। यह जो होता रहता है उसका एक बार नाम भी दिया है।

अब याद आया, " बहुरूपी आकृतियों की प्रतिध्वनि"। वह था जब एक फैक्ट्री में लन्च से 45 मिनट पहले हाथ-वाथ धो कर, मशीनें बन्द कर बैठ गये। कोई मीटिंग नहीं हुई थी, किसी ने किसी को कहा नहीं था।

ताऊ, इस दुनिया में समय की जो सोच है वह इन्तजार वाली सोच नहीं है। हम समय को तुरन्त और सक्रिय जीते हैं। करने और सोचने की घनिष्ठता बहुत बढ गई है। सोचने और करने, करने और सोचने में विभाजन लुप्त हो रहा है। सोचने और करने वाले एक ही हैं। करने और सोचने में अन्तराल-गैप बहुत-ही कम है।

बन्धु, आप जो बोल रहे हो और उसका जितना भी मैं समझा हूँ उससे जो उभार हैं, उनकी जो रफ्तार है, उनका जो विस्तार है, उनकी जो तीव्रता-तीक्ष्णता है वो तो और बढ़ेंगी।

आप भी कह रहे हो कि पिछले पाँच साल में यह बढ रही हैं। हमें तो अपने कार्यस्थल, दोस्तों के कार्यस्थल में यह दिख रही हैं। मैं इतनी उम्र में ही 15 कार्यस्थलों पर तो स्वयं देख चुका हूँ। और, कम से कम हजार कदमों में तो शामिल रह चुका हूँ। मेरा आप से यह कहना है कि आप यह जान पा रहे हो लेकिन भाषा की जो चुस्ती चाहिये उसके लिये आप कुछ प्रयास करो। पुरानी भाषा के लुप्त होने पर आश्चर्य न करें और यह मान कर चलें कि बहुत तेजी से बदल रही चीजें नये रूपों में अभिव्यक्त हो रही हैं।

बन्धु, बहुत अच्छा लगा आप से बात करके। फिर जरूर मिलना।

बहुत कमजोर औ

1948 में संसद में जो न्यूनतम वेतन अधिनियम पारित किया था उसके अनुसार आज न्यूनतम वेतन 50-60 हजार रुपये महीना बनता है।

ओवर टाइम के पैसे तनखा के दुगुनी दर से देने का कानून है। हरियाणा में एक घण्टे ओवर टाइम के अकुशल श्रमिक के 78 रुपये बनते हैं। दिल्ली में एक घण्टे ओवर टाइम के अकुशल श्रमिक के 92 रुपये बनते हैं।

हरियाणा सरकार द्वारा 1 जनवरी 2016 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 7976 रुपये मासिक (8 घण्टे के 307 रुपये)
कुशल ब 9695 रुपये मासिक (8 घण्टे के 373 रुपये)
उच्च कुशल श्रमिक 10,179 रुपये मासिक (8 घण्टे के 392 रुपये)

एल जी बी रोलऑन (17 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में एक भी मजदूर परमानेन्ट नहीं, ट्रेनी 5, तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 150 मजदूर। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की में होण्डा, सुजुकी, बजाज दुपहियों के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से।

पुलिस चौकी के पास एफ-3/9 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित कम्पनी का नाम नहीं बताते। फैक्ट्री में बायर सैफायर का काम करते 100 मजदूरों में ई एस आई व पी एफ दो-चार की ही। टेलर को 8 घण्टे के 300-325-350 रुपये। सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी और रात साढे बारह तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से।

एम एस पी टैक्सटाइल्स (26 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, महीने के तीसों दिन। कपड़ा बुनने वाले वीवर पीस रेट पर और तनखा वालों का वेतन 4500-6000-7000 रुपये।

कबीर लैदर (262 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में तनखा बहुत देरी से, फरवरी की अप्रैल में। एक वरकर ने 6 दिन बाद काम छोड़ दिया। छह दिन किये काम के पैसों के लिये जब भी फैक्ट्री जाता है, कहते हैं 15 दिन बाद आना।

जे जे एक्सपोर्ट (सी-54/2 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 7500 रुपये। सैम्पलिंग टेलरों की तनखा 11,000 रुपये परन्तु हस्ताक्षर 11,622 पर करवाते हैं और 11,622 पर ही ई एस आई व पी एफ काटते हैं।

सुपर ऑटो इलेक्ट्रिक (9 जे सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 300 मजदूरों की तनखा से ई एस आई तथा पी एफ के पैसे काटते हैं पर इन में से 150 को ई एस आई कार्ड नहीं दिये हैं और पी एफ नम्बर नहीं बताते।

किरण उद्योग (14 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, अप्रैल की 18 मई को दी।

ग्लोबल इम्ब्राइड्री (एफ-29/6 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 26 दिन के हैल्पर को 7500 रुपये और ऑपरेटर को 10,500 रुपये। ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं।

ऋचा एण्ड कम्पनी (2 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 1 बजे तक काम सामान्य। टेलरों का महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम और फिनिशिंग वरकरों का इससे भी ज्यादा। प्रतिदिन के 2 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकि घण्टों का सिंगल रेट से। धागे काटने और प्रैस का कार्य करते 100 मजदूरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं।

फोरचून मार्केट (डी-1/2 ओखला फेज-2, दिल्ली) में डिस्पैच का कार्य करते वरकरों को दस घण्टे ड्युटी पर 11,000 रुपये देते हैं, ओवर टाइम के पैसे नहीं देते।

और बातें यह भी

कैलाश रिबन (403 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में तनखा बैंक में भेजी जाती थी पर नवम्बर 2015 से नये ग्रेड से पहले कम्पनी ने बैंक में तनखा भेजनी बन्द कर दी। दबाव के कारण मार्च से कम्पनी ने तनखा फिर बैंक में भेजनी शुरू की है। हेराफेरी दर हेराफेरी के खेल में अब कम्पनी तनखा के स्थान पर 10 घण्टे रोज की ड्युटी के पैसे को तनखा के तौर पर बैंक में भेजती है।

दिल्ली सरकार द्वारा 1 अप्रैल 2016 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 9568 रुपये मासिक (8 घण्टे के 368 रुपये);
अर्ध-कुशल श्रमिक 10,582 रुपये मासिक (8 घण्टे के 407 रुपये);
कुशल श्रमिक 11,622 रुपये मासिक (8 घण्टे के 447 रुपये)।

बजाज मोटर (602-603 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 350 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में बी एम डब्लू कार के हब बनाते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। डिप्लोमा ट्रेनी 9500 तनखा और 500 रुपये प्रेजेन्टी पर लगा। दस दिन बाद नौकरी छोड़ दी क्योंकि गर्म तेल का काम, सुरक्षा का प्रबन्ध नहीं, कोहनी तक हाथ जल जाते। दस दिन के काम के पैसे चक्कर कटवाने के बाद भी नहीं दिये।

ग्लोब कैपेसिटर (30/8 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 40 परमानेन्ट वरकरों की ई एस आई 1 अप्रैल से बन्द कर दी जबकि उनकी तनखा 11,000 रुपये ही है। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, ओवर टाइम दिखाते नहीं और सिंगल रेट से, पैसे ए टी एम में।

मनीफोल्ड (138 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में नौकरी छोड़ा वरकर मार्च की तनखा लेने 10 अप्रैल को फैक्ट्री गया तो बोले 25 को आना। तब बोले दूसरे के पास है, ले लेना। दूसरा बोला कि झूठ बोला है। 15-20 बन्दे 29 मई को फैक्ट्री गये तो : मारने आये हो, नहीं दूँगा...... और मेन ठेकेदार फोन पर बोला कि 12 जून को पैसे दे देंगे।

थीम एक्सपोर्ट (डी-5 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में निशा फैशन नाम वाले मजदूरों की ई एस आई व पी एफ अचानक 1 अप्रैल से बन्द कर दी। ऐसा ही 1 मई से एन एन के नाम वाले मजदूरों के साथ। अब पी एम के नाम से कार्ड बना रहे हैं, टेलर को 8 घण्टे के 375 रुपये।

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर (1 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में स्कूटर इंजन असेम्बली लाइन पर एक शिफ्ट में 50 एग्जेक्युटिव, 150 परमानेन्ट वरकर, और ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 300 मजदूर (कैजुअल वरकर)। लाइन पर पूरा काम कैजुअल वरकर करते हैं और बाकि लोग देखते हैं। एग्जेक्युटिव में से कुछ लोग असिस्टेंट मैनेजर बने हैं परन्तु एक जिसका प्रमोशन नहीं हुआ वह हमेशा लाइन पर घूमता रहता है और कैजुअल वरकरों पर खुन्दक निकालता है।

एस एम एस एक्सपोर्ट (डब्लू-7 व 8 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में ड्युटी सुबह 9½ से रात 9½ की पर बुलाते सुबह 7½ से हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। दिसम्बर में ठेका समाप्त ठेकेदार के 100 मजदूरों की ई एस आई व पी एफ बन्द जबकि वे फैक्ट्री में काम कर रहे हैं। अपना डेढ-दो साल का फण्ड निकालने के लिये फार्म भरने को यह मजदूर कहते हैं तो कम्पनी पहले इस्तीफा देने को कहती है।

शिवम् ऑटोटेक (1 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में सब मजदूर टेम्परेरी, दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। वर्क लोड बढाने के लिये मैनेजमेन्ट के हथकण्डों को मजदूर मिल कर फेल कर रहे हैं। प्रोडक्शन बढाने में नाकाम मैनेजमेन्ट बौखला गई है।

सन वैक्यूम (408 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में स्टाफ ही परमानेन्ट, दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 700 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। ओवर टाइम सिंगल रेट से। सुब्रोस फैक्ट्री में 29 मई को आग लगी इस कारण सन वैक्यूम फैक्ट्री 31 मई को बन्द रखी। कम्पनी ने खुद बन्द की पर मजदूरों को इसके पैसे नहीं।

फोर्टिस एस्कोर्ट्स अस्पताल

फरीदाबाद स्थित फोर्टिस एस्कोर्ट्स अस्पताल में कार्यरत करीब 600 डॉक्टरों , नर्सों , अन्य वरकरों का पी एफ भविष्य निधि संगठन में जमा होता था। अचानक 2011 में यह बन्द कर दिया और मैनेजमेन्ट ने तनखाओं से काटी पी एफ राशि फोर्टिस ट्रस्ट में भेजनी शुरू कर दी। कर्मचारियों ने एतराज किया। मैनेजमेन्ट को 2014 में फोर्टिस ट्रस्ट में जमा की पी एफ राशि को वापस भविष्य निधि संगठन में भेजना पड़ा। अब हर महीने पी एफ राशि भविष्य निधि संगठन में जमा की जा रही है।

श्रम विभाग के अनुसार एक ठेकेदार , संध्या एण्ड कम्पनी को फोर्टिस एस्कोर्ट्स अस्पताल को 170 वरकर सप्लाई करने का लाइसैन्स दिया गया है। ठेकेदार कम्पनी कहती है कि उसने फोर्टिस एस्कोर्ट्स अस्पताल को 353 वरकर सप्लाई किये हैं। वार्ड बॉय/हाउसकीपिंग का कार्य करते इन 353 वरकरों की तनखा में काफी फर्क है : 58 वरकरों की तनखा 15 से 27 हजार रुपये जबकि 295 की आठ-नो हजार रुपये है। ठेकेदार कम्पनी ने 7 मई 2016 की सूचना में लिखा : उपस्थित होने के बावजूद 353 वरकरों में से 157 ने 7 मई को अप्रैल की तनखा लेने से इनकार कर दिया ..... वैसे, फोर्टिस एस्कोर्ट्स अस्पताल में इन 353 वरकरों वाला ही कार्य करते 32 वरकरों की तनखा 50 हजार रुपये के दायरे में है

पी एफ के माननीय सदस्य

भविष्य निधि संगठन में जमा वरकरों के साढे आठ लाख करोड़ रुपयों का संचालन ट्रस्ट करता है जिसमें केन्द्र व राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों के संग कम्पनियों के संगठनों के प्रतिनिधि और ट्रेड यूनियनों के बड़े लीडर ट्रस्टी हैं।

क्षेत्रीय भविष्य निधि संगठन में राज्य स्तर के ट्रेड यूनियन लीडर माननीय सदस्य हैं। पी एफ से राशि निकालने के फार्म पर हस्ताक्षर करने को इन माननीय यूनियन नेताओं को अधिकृत किया गया है। इस-उस कारण से कई मजदूर फार्म पर कम्पनी अधिकारी का हस्ताक्षर नहीं ले पाते। ऐसे मजदूर इन लीडरों के पास जाते हैं तब पी एफ से राशि निकालने के फार्म पर हस्ताक्षर करने के बदले में माननीय यूनियन लीडर 100 रुपये मजदूर से लेते हैं और पर्ची काट देते हैं।

कोलाहल

26 मई को कड़कड़डुमा कोर्ट , दिल्ली। दूसरी मंजिल पर तीन श्रम न्यायालय। तीन महीने से तनखा नहीं दिये जाने के मामले में शाहदरा स्थित एक अस्पताल के करीब 300 वरकर एक लेबर कोर्ट में तारीख पर पहुँचे थे। दूसरी मंजिल पर लेबर कोर्टों के बाहर यह 300 लोग 5-5 , 7-7 के ग्रुपों में बातचीतें कर रहे थे। जो भी वरकर 26 मई को तीन लेबर कोर्टों में केसों में तारीख पर आ रहे थे वो भी इन 300 से बातचीतें करने लगते। पुलिसवाले बार-बार कह रहे थे कि धीरे-धीरे बात करो, कोर्ट में शांति चाहिये। चालीस-पचास टोलियों में बातचीतों का ''शोर''........ कोलाहल ! कोलाहल !!

बिजली बोर्ड

हरियाणा सरकार ने बिजली बोर्ड को कई भागों में बाँट कर ठेकेदार कम्पनियों के जरिये वरकर रखने का सिलसिला चला रखा है। मई 2007 से अप्रैल 2012 के दौरान मैनपावर सप्लाई का ठेका जे डी सेक्युरिटी एण्ड एलाइड सर्विसेज को दिया गया। वरकरों की तनखा से ई एस आई तथा पी एफ की राशि काटी जाती रही पर जमा नहीं करवाई गई। पाँच वर्षों तक सरकार चुप रही, सरकारी विभाग चुप रहे। जे डी सेक्युरिटी का ठेका 30.4.2012 को समाप्त हुआ। वरकरों ने फण्ड के अपने पैसे निकालने चाहे तब पता चला कि पी एफ के 67 करोड़ रुपये ठेकेदार कम्पनी ने जमा ही नहीं किये हैं। इधर चार वर्ष से मामला अदालतों में है।

साझेदारी

✶ छह महीने से 13 हजार की जगह मजदूर समाचार की 15-16-17 हजार प्रतियाँ छापनी पड़ रही हैं। आई एम टी मानेसर में तीन स्थानों पर, उद्योग विहार गुड़गाँव और ओखला औद्योगिक क्षेत्र में एक-एक स्थान पर, फरीदाबाद में 13 जगहों पर मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है। डाक द्वारा भी प्रतियाँ भेजी जाती हैं। इन्टरनेट के जरिये पी डी एफ रूप में भेजते हैं। नोएडा, बीकानेर, हिसार, चेन्नई, पुणे, बोकारो, भिवानी, लुधियाना, इलाहाबाद, नागपुर आदि स्थानों पर मजदूर समाचार की 5-10-20-50-100-150 प्रतियाँ मित्र बाँटते हैं। दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूर समाचार की बीस हजार प्रतियाँ प्रतिमाह आवश्यक लगती हैं। बाँटने में अधिक लोगों की साझेदारी के बिना यह नहीं हो सकेगा। सहकर्मियों-पड़ोसियों-मित्रों-साथियों को देने के लिये 10-20-50 प्रतियाँ हर महीने लीजिये और मजदूर समाचार के वितरण में साझेदार बनिये।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। अलग से जो समय चर्चाओं के लिये निकालते हैं उसकी सूचना चन्द लोगों को ही दे पाते हैं। तब अधिकतर से मुलाकात अकस्मात-सी होती है। पहले से सोच-विचार करने, सहज चर्चा के लिये पहले से पता होना आवश्यक लगता है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ कर रहे हैं। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— वीरवार, 30 जून को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास बुधवार, 29 जून को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— शुक्रवार, 1 जुलाई को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में जून में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन नम्बर : 0129-6567014

कार्यस्थल की , रास्तों की , निवास स्थानों की रोचक बातें साझा करें सन्देश , चित्र , ऑडियो , वीडियो व्हाट्सएप पर भेज कर । व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

< baatein1@yahoo.co.uk >

ई-मेल के लिये बेहतर होगा जीमेल वाली आई डी का प्रयोग करें।

एक और अनुभव संग विचार

बेलसोनिका ऑटो कम्पोनेन्ट्स

प्लॉट 1 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर (मारुति सुजुकी परिसर के अन्दर) स्थित बेलसोनिका फैक्ट्री में मारुति सुजुकी वाहनों के फ्रन्ट पिलर, फ्रन्ट एण्ड, सैन्टर पिलर, रियर फ्रेमवर्क, साइड बम्पर फ्रेमवर्क आदि हिस्से बनाते 89 परमानेन्ट मजदूर (टैक्निशियन), 354 ट्रेनी, और चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 मजदूर। परमानेन्ट वरकरों में से 45 ने यूनियन का रजिस्ट्रेशन करवाया ही था कि 10 अक्टूबर 2014 को मैनेजमेन्ट ने उन सब को सस्पैन्ड कर दिया। और, कुछ परमानेन्ट मजदूरों की मैनेजमेन्ट ने कमेटी बना कर फैक्ट्री में आतंक का माहौल बनाने की कोशिश की।

शीट मैटल का काम। ढाई हजार टन व 1600 टन ट्रान्सफर प्रैस, 1000 से 300 टन की टेन्डेम लाइन, 300 से 80 टन की प्रोग्रेसिव प्रैस के संग-संग 145 स्पॉट वैल्डिंग रोबोट, 23 ए डब्लू वैल्डिंग रोबोट, मैनुअल वैल्डिंग, स्टेशन स्पॉट वैल्डिंग। बहुत हार्ड वर्क और फिर बी-शिफ्ट में तो जबरन 12 घण्टे रोकना। परमानेन्ट, ट्रेनी, और ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूरों की तनखाओं में ज्यादा फर्क नहीं तथा सब वरकर काम करते। सब मजदूरों की वर्दी भी एक जैसी। स्थाई और अस्थाई के बीच, सब मजदूरों के बीच तालमेलों की अच्छी स्थिति। ऐसे में भी (बल्कि शायद ऐसे में ही), यूनियन रजिस्ट्रेशन द्वारा बात को 89 परमानेन्ट मजदूरों में समेटने का प्रयास हुआ। लेकिन, मैनेजमेन्ट ने यूनियन का रजिस्ट्रेशन करवाने वाले 45 को फैक्ट्री से बाहर कर दिया। वे 45 परमानेन्ट 900 टेम्परेरी मजदूरों से बात करने, रिश्ते बनाने को मजबूर हुये।

यूनियन बनाने वाले 45 ने जब भी मीटिंग के लिये बुलाया तब 700 मजदूर तो पहुँचे ही। मीटिंगों में कम्पनी के लोग गुपचुप वीडियो बनाते और फिर उन के आधार पर मजदूरों को मैनेजमेन्ट निकालती। निकाले गये परमानेन्ट, ट्रेनी, ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूरों की सँख्या 180 हो गई। इधर 6 महीने से मैनेजमेन्ट ने निकालना बन्द किया हुआ है।

कम्पनी की शेयरों में बेलसोनिका का हिस्सा 70 प्रतिशत और मारुति सुजुकी का 30 प्रतिशत है। बेलसोनिका की तीन फैक्ट्रियाँ जापान में हैं और एक फैक्ट्री इण्डोनेशिया में भी।

हरियाणा सरकार के रजिस्ट्रार ने यूनियन का रजिस्ट्रेशन किया। बेलसोनिका कम्पनी इसके खिलाफ चण्डीगढ में हाई कोर्ट गई। दाँव-पेंच में कम्पनी ने 354 ट्रेनी को वर्कमैन (परमानेन्ट) कहा और यूनियन ने कहा कि ट्रेनी वर्कमैन (परमानेन्ट) नहीं हैं। यानी, कम्पनी के अनुसार ट्रेनी वरकर यूनियन की सदस्यता के हकदारों में जबकि यूनियन के अनुसार ट्रेनी वरकर यूनियन के सदस्य नहीं बन सकते। सुप्रीम कोर्ट के हवाले दिये गये। हाई कोर्ट ने 9 दिसम्बर 2014 को कम्पनी की अपील खारिज कर दी। ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 मजदूरों का जिक्र न तो कम्पनी ने किया और न ही यूनियन ने।

अपने निलम्बन के खिलाफ 45 परमानेन्ट वरकर श्रम विभाग गये। उप श्रमायुक्त के बुलाओं को बेलसोनिका मैनेजमेन्ट ने अनसुना किया। उप श्रमायुक्त की रिपोर्ट पर चण्डीगढ से श्रमायुक्त ने कम्पनी को अनुचित श्रम व्यवहार के लिये नोटिस दिया..... नोटिस दिया। निलम्बित 45 को मैनेजमेन्ट ने आरोप-पत्र भी तीन महीने बाद जनवरी 2015 में तब दिये जब कोर्ट ने ऐसा करने का आदेश दिया। लीडर कहते हैं कि बेलसोनिका मैनेजमेन्ट मामला हाई कोर्ट की डबल जज बैन्च में ले गई है जहाँ 12 अप्रैल 2016 को कुछ बहस हुई और 12 जुलाई की तारीख दे दी गई।

इन डेढ वर्ष में माँगने पर तीन बार दो-दो हजार रुपये कर अठारह-बीस लाख रुपये बेलसोनिका मजदूर दे चुके हैं यूनियन को, यूनियन बनाने वाले परमानेन्ट वरकरों को। और, जो बेलसोनिका परमानेन्ट मजदूर यूनियन लीडर बने हैं वो कानूनवाद में इस कदर धँसे हैं कि फैक्ट्री में शान्ति से सामान्य उत्पादन को वे मजदूरों के शास्त्र तथा शस्त्र प्रस्तुत करते रहे हैं। इन डेढ वर्ष के दौरान फैक्ट्री में कभी भी काम बन्द नहीं, कोई उथल-पुथल नहीं, शांति से प्रोडक्शन चलता रहा है।

भारत सरकार के क्षेत्र में 85 हजार यूनियनें रजिस्टर्ड हैं। नियम-कानून-विधान-संविधान के अनुसार फैक्ट्रियों में रजिस्टर्ड यूनियन के सदस्य परमानेन्ट मजदूर ही बन सकते हैं। कैजुअल वरकर, ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूर, ट्रेनी, अप्रेन्टिस इन यूनियनों के सदस्य नहीं बन सकते। आज फैक्ट्रियों में काम कर रहे अस्सी-नब्बे प्रतिशत मजदूर इन यूनियनों के मेम्बर नहीं बन सकते। बेलसोनिका फैक्ट्री इस सब से बाहर नहीं है। आई एम टी मानेसर में ही होण्डा, मारुति, नपीनो ऑटो, मुंजाल किरियु , अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स फैक्ट्रियों के उदाहरण सामने हैं।

✶ ***यूनियन रजिस्ट्रेशन की फीस पाँच रुपये है। टाइप-वाइप, डाक-वाक का खर्च दो-तीन सौ रुपये।***

✶ ***फैक्ट्री में यूनियन के सदस्य स्थाई मजदूर ही बन सकते हैं। परमानेन्ट वरकर ही यूनियन के मेम्बर बन सकते हैं।***

✶ ***अस्थाई मजदूर फैक्ट्री में यूनियन के सदस्य नहीं बन सकते। टेम्परेरी वरकर , कैजुअल वरकर , ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूर , ट्रेनी , अप्रेन्टिस फैक्ट्री में यूनियन के मेम्बर नहीं बन सकते।***

✶ ***आज फैक्ट्रियों में कार्यरत अस्सी-नब्बे प्रतिशत मजदूर फैक्ट्री यूनियनों के सदस्य नहीं बन सकते।***

ऐसे में कानूनवाद पर सवाल उठाना, फैक्ट्री यूनियनों पर सवाल उठाना जरूरी है। इससे भी ज्यादा जरूरी है फैक्ट्रियों के अन्दर और औद्योगिक क्षेत्रों में स्थाई-अस्थाई, परमानेन्ट-टेम्परेरी वरकरों के बीच तालमेलों को बढाना। बेंगलुरू में गारमेन्ट वरकरों ने , महिला मजदूरों ने नेताओं और यूनियनों से परे मजदूरों के तालमेलों के असर की झलक दिखाई है , सरकार को मजबूर हो कर पी एफ वाले नये नियम रद्द करने पड़े।

नोएडा में

एम ए डिजाइन (ए-41 सैक्टर-80 , नोएडा फेज-2 , उत्तर प्रदेश) मैटल पॉलिश फैक्ट्री में मई महीने में मशीनों पर 5 मजदूरों के एक्सीडेन्टों में चोटें लगी। कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी। रात में पॉलिश का काम बन्द दिखाते हैं जबकि साँय 5 बजे कार्ड पंच के बाद पॉलिश वालों से कम्पनी पीस रेट पर रात दो बजे तक काम करवाती है। रात को हैल्परों से भी मशीनें चलवाते हैं। रात को चोट लगने पर जो छुट्टी करनी पड़ती हैं उनके पैसे मजदूर को कम्पनी नहीं देती।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।